

आपके पत्र



संपादक जी,

मधुमेहवाणी पत्रिका नहीं, बल्कि ये डायबिटीज़ डिक्शनरी है।

मधुमेहवाणी पत्रिका में अपने टेबिल पर रखता हूँ। मरीज़ों की भीड़ के कारण मुझे मरीज़ों के प्रश्नों को ठीक से समझाने का मौका ही नहीं मिलता। बस उसका प्रश्न सुना और उसको मधुमेहवाणी पत्रिका उसके प्रश्नानुसार दे दी। मरीज़ भी खुश और मैं भी खुश।

— डॉ. अशरफ अली
चिकित्सा अधिकारी,
पी.एच.सी. जासापारा, सुल्तानपुर (उ.प्र.)



महोदय,

मुझे डॉक्टर साहब ने ट्रेड मिल टेस्ट द्वारा दिल की जाँच करवाने का परामर्श दिया था। मैं कई दिन से इसे टाल रहा था। मन में कुछ शंकाएँ थीं। अबकी 'मधुमेह वाणी' में डॉ. योगेश मेहरोत्रा का लेख पढ़ बढ़िया जानकारी प्राप्त हुई। पत्रिका में इतनी उपयोगी जानकारी मिलती है कि कई लोगों का भला होता होगा। आपका यह प्रयास बहुत ही सार्थक है।

— दिवाकर कटारे, इटारसी



संपादक जी,

मेरे बच्चे को टाईप-1 डायबिटीज़ है। रोज़ इंसुलिन का इंजेक्शन लगाते देख मन पीड़ा से भर जाता है। मुझे बड़ी उम्मीद थी कि सूँघने वाली इंसुलिन जल्द बाज़ार में आ जायेगी। शोध समाचार में इंहेल्ड इंसुलिन के बाज़ार से हटाये जाने की जानकारी प्राप्त हुई। पढ़कर निराशा हुई। आगे क्या नया हो रहा है बच्चों की डायबिटीज़ में इसकी जानकारी देते रहें। आप बड़ों की डायबिटीज़ पर ज्यादा सामग्री देते हैं। आशा है यह असंतुलन अगले अंकों में दूर करेंगे।

— ज्ञान प्रकाश चौरसिया, रायपुर



संपादक महोदय,

प्रोस्टेट ग्रंथी पर डॉ. सुधीर लोकवानी का आर्टिकल बहुत बढ़िया था। जितनी तारीफ की जाये कम है। इतने सरल तरीके से वैज्ञानिक जानकारी हमारे जैसे लोगों को समझ आ जाये तो वह निश्चित ही डॉक्टर साहब की

समझाने की क्षमता को दर्शाती है। मेरा हाल ही में प्रोस्टेट का ऑपरेशन हुआ था। मैं इन सब मुश्किलों से गुज़रा हूँ और कह सकता हूँ कि ये जानकारी सभी पचास से ऊपर की उम्र के मर्दों को ज़रूर पढ़ना चाहिये। मेरी तरफ से डॉ. लोकवानी जी को धन्यवाद दीजियेगा।

— सी.आर. मंगतानी, भोपाल.



संपादक महोदय,

मैं मधुमेह वाणी का नियमित पाठक हूँ। इसका हर अंक मुझे प्रभावित करता है। मैंने मेरे पास उपलब्ध सारे अंकों को सावधानी से सहज के रखा है। जैसे-जैसे नए अंक मेरे पास आते हैं मेरी मधुमेह की जानकारी उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। पिछले ढाई सालों में अपनी बीमारी के प्रति स्वयं को निरंतर जागरूक होता देख रहा हूँ। यह आपके तथा अन्य लेखकों द्वारा दिये गये उत्कृष्ट लेखों का ही कमाल है कि मेरी ब्लड शुगर आज-कल बहुत अच्छी चल रही है। मेरा HbA1c जो पहले 10.6% रहता था वह अब 7.4% हो गया है। वह भी दवा में तथा उसकी खुराक में बिना किसी परिवर्तन के। यह आपके द्वारा बहुत अधिक तरह से लिखे गए लेखों का ही कमाल है। 'मधुमेह वाणी' मेरे लिए किसी वरदान से कम नहीं है।

— जावेद खान, उज्जैन



श्रीमान् संपादक जी

मधुमेह वाणी का अंक पढ़ा। शराब और मधुमेह डॉ. अनिल कपूर का लेख पढ़ कर मालूम हुआ कि मधुमेहियों के लिए यह कितनी खतरनाक है। सच पूछो तो मुझे इस बारे में किसी ने जानकारी नहीं दी थी। मेरा तो यही सोचना था (मैंने ऐसा कहीं पढ़ा भी था) कि दिन में 30 से 60 मि.मी. शराब पीने से हृदय को लाभ ही होता है। और मैं बेफिक्र होकर इतनी शराब तो ले ही लेता था। मैं निरंतर रूप से शराब का आदी नहीं था पर डॉ. कपूर के लेख ने मुझे भयभीत ही कर दिया था और यह भय मेरे लिये वरदान ही साबित हुआ है। पिछले 3 माह में मैंने शराब की एक बूंद भी नहीं छुई है। 'मधुमेह वाणी' को काटि-कोटि धन्यवाद।

— उदय सिंह, छतरपुर